IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियाँ: गोल्डन ट्रायंगल क्षेत्र में नशीली दवाओं के अवैध व्यापार के संदर्भ में

रश्मि बाजपेयी
शोध छात्रा,
श्यामा प्रसाद मुखर्जी डिग्री कॉलेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश

म्यांमार दक्षिण दक्षिण पूर्व एशिया के लिए भारत का प्रवेश द्वार और मादक पदार्थों की तस्करी के लिए प्रमुख देश है। म्यांमार से भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में ड्रग्स के अवैध प्रवाह के कारण भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती है। म्यांमार अफीम का बड़ा उत्पादक तथा सिंथेटिक दवाओं का अग्रणी निर्माता है और थाईलैंड तथा लाओस के साथ गोल्डन ट्रायंगल बनाता है। भारतीय राज्य मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश म्यांमार के साथ एक खुली सीमा साझा करते हैं, जो इस क्षेत्र में मादक पदार्थों की तस्करी को बढ़ावा देते हैं। म्यांमार में उत्तर राजनीतिक स्थिरता मादक पदार्थों की तस्करी में अहम भूमिका निभाता है। भारत इन ड्रग्स के प्रमुख बाजारों में से एक बन गया है।

मुख्य शब्द

गोल्डन ट्रायंगल, गोल्डन क्रीसेंट, ड्रग्स, म्यामांर, अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध

प्रस्तावना

मादक पदार्थों की तस्करी गैर पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियां जैसे कि, अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध राज्य की शांति और सद्भाव को बाधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और मादक पदार्थों की तस्करी जो सबसे प्रचलित अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराधों में से एक है उसको बढ़ावा देते हैं। लैटिन अमेरिकी देश मादक दवाओं से संबंधित अपराधों में पहले से ही संकट में रहे हैं। लेकिन वर्तमान समय में दक्षिण एशियाई देश तथा साथ ही दक्षिण पूर्व एशियाई देश, गोल्डन क्रीसेंट, अफगानिस्तान–ईरान–पाकिस्तान की उपस्थिति के साथ और गोल्डन ट्रायंगल म्यांमार–लाओस–थाईलैंड को भौगोलिक कारकों के साथ–साथ क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरताओं के कारण बढ़ते दवा उत्पादन और खपत की गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। नशीली दवाओं और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय यूनो डीसी के अनुसार मादक पदार्थों की तस्करी एक वैश्विक अवैध व्यापार है जिसमें उन पदार्थ की खेती, निर्माण, वितरण और बिक्री शामिल है जो नशीली दवाओं के निषेध कानून के अधीन है। यूएन ओडीसी 2023 रिपोर्ट में स्पष्ट होता है कि, मादक पदार्थों की तस्करी से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास में गिरावट से आर्थिक अस्थिरता पैदा होती है जिसके परिणाम स्वरुप जन समुदाय का आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग अवैध अर्थव्यवस्था में शामिल हो जाता है।

म्यांमार से भारत तक नशीली दवाओं का प्रवाह

उत्तर पूर्व में भारत अपनी सीमा का एक बड़ा हिस्सा म्यांमार के साथ साझा करता है, जो अफीम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और सिंथेटिक दवाओं के उत्पादन और वितरण के लिए प्रमुख केंद्र है। भारत और म्यांमार लगभग 1600 किलोमीटर की सीमा साझा करते हैं, जो भारत के चार पूर्वोत्तर राज्यों मिजोरम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड के लिए अंतरराष्ट्रीय सीमा बनाती है। भारत म्यांमार के साथ समुद्री सीमा भी साझा करता है, इसीलिए म्यांमार को प्रभावित करने वाली किसी भी परिस्थिति का भारत के पूर्वोत्तर राज्यों पर विशेष रूप से दवा उत्पादन के मामले में विशेष प्रभाव पड़ेगा। म्यांमार में अफीम एवं अन्य दवाओं का सबसे बड़ा उत्पादक स्थान है। भारत की सीमा म्यांमार के कई राज्यों से लगती है जो दवाओं के सबसे बड़े उत्पादन में से एक है। भारत के पूर्वोत्तर राज्य म्यांमार से आने वाली दवाओं से भरे हैं जो पूर्वोत्तर के विद्रोही समूह के लिए वित्तीय स्रोत के रूप में भी काम करते हैं। मादक पदार्थों के व्यापार के लिए भूमि और समुद्री दोनों मोर्चों का उपयोग मार्ग के रूप में किया जाता है। म्यांमार का मादक द्रव्य भूमि सीमाओं और बंगाल की खाड़ी से होकर गुजरता है। भारत और पूर्वोत्तर राज्यों से म्यांमार की निकटता को देखते हुए म्यांमार से भारत तक ड्रग्स का आवागमन आसान है। ह्यूमन न्यू सर्विस 2009 के अनुसार 90: दवाओं की तस्करी का मूल स्रोत म्यांमार ही है। इन दवाओं में अफीम, हेरोइन के साथ एंफ्टामिन प्रकार के उत्तेजक पदार्थ भी शामिल है। मणिपुर के मोरेह में भारत–म्यांमार सीमा को ड्रग्स का प्रमुख केंद्र माना जाता है। हाल ही में मोरेह में ड्रग्स की बरामदगी और गिरफ्तारियों का सिलसिला लगातार जारी रहा है। ड्रग्स म्यांमार के तमु गांव से होते हुए मोरेह तक पहुंचते हैं और फिर इंफाल से नागालैंड की राजधानी कोहिमा और दीमापुर तक पहुंचाए जाते हैं।

चीन की भूमिका

म्यांमार में ड्रग्स के प्रवाह में चीन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चीन के अपराध सिंडिकेट द्वारा नशीली पदार्थों के प्रवाह पर नियंत्रण को ध्यान में रखते हुए पूर्वोत्तर राज्यों के माध्यम से भारतीय बाजारों में आने वाली ड्रग्स का चीन के साथ प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष संबंध है। दक्षिण एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया में नशीली दवाओं के नेटवर्क को बड़े पैमाने पर चीनी नेटवर्क द्वारा नियंत्रित किया जाता है। म्यांमार के तख्तापलेर से ड्रग्स में परिवर्तन म्यांमार ने औपनिवेशिक युग के साथ–साथ एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना के दौरान तीव्र राजनीतिक परिस्थितियों को देखा है। राजनीतिक माहौल में संस्था ने राज्य की अर्थव्यवस्था को चिंताजनक गिरावट दर पर प्रभावित किया है। इसकी 40: आबादी गरीबी रेखा से नीचे है। 2022 में जारी विश्व बैंक म्यांमार आर्थिक मॉनिटर रिपोर्ट के अनुसार एक बड़ी आबादी के गरीबी रेखा से नीचे आने के साथ–साथ घरेलू आय भी कम हो रही है। जनसंख्या की तरह शक्ति में कमी के कारण छोटी–छोटी बुनियादी सुविधाओं की आपूर्ति पर छोटे व्यवसाययों पर सीधा असर पड़ रहा है। विश्व बैंक 2022 रिपोर्ट इस प्रकार म्यांमार की आबादी की सामाजिक जीवन स्थितियों में भारी गिरावट ने आबादी को अवैध अर्थव्यवस्थाओं से आजीविका उत्पन्न करने के लिए प्रेरित किया है। अफीम की खेती अन्य राज्यों के साथ–साथ म्यांमार के शान और कचिन में राज्यों में होती है, इसलिए इन मादक पदार्थों का बाजार भारत के पूर्वोत्तर में बनाना आसान है।

तख्ता पलट से पहले तथा बाद में ड्रग्स की स्थिति

2016 से 2021 के दौरान म्यांमार में मादक पदार्थों की एक अलग प्रवृति देखने को मिलती है। 2016 से 2020 की अवधि में उन यूएनओडीसी की रिपोर्ट के अनुसार अफीम का उत्पादन स्थिर माना गया इस रिपोर्ट के अनुसार म्यांमार में लगभग अफीम के उत्पादन में 25: की कमी पाई गई। लेकिन उत्पादन की इस कमी को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता है कि नशीली दवाओं की खपत में कमी हुई है, बल्कि सिंथेटिक दवाओं के निर्माण में और वृद्धि हुई है, और इसका असर अफीम की खेती पर पड़ा है। इस अवधि के दौरान असम में सबसे अधिक ड्रग्स की तस्करी दर्ज की गई। जिसमें सिंथेटिक दवाओं का बड़ा हिस्सा म्यांमार से अवैध रूप से भेजा गया था। (टाइम्स आफ इंडिया) वर्ष 2017 से असम और पूर्वोत्तर राज्य में सिंथेटिक दवाओं की आपूर्ति चरम पर है। 2021 के तख्तापलट ने म्यांमार की आबादी के सामान्य जीवन को पूरी तरह से तबाह कर दिया है, जिसके परिणाम स्वरुप वहां के लोगों ने अवैध रूप से दवाओं के व्यापार का सहारा लिया है। म्यांमार की भौगोलिक स्थिति के कारण म्यांमार से भारत के पूर्वोत्तर राज्यों तक आवागमन सुगम है और पड़ोसी राज्य इन ड्रग्स के लिए बाजार बन जाते हैं। तख्तापलट के बाद म्यांमार से ड्रग्स की आपूर्ति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। घने जंगलों और पहाड़ों के कारण आवागमन आसान हो जाता जिसके कारण मणिपुर और मिजोरम को ड्रग्स सम्बंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

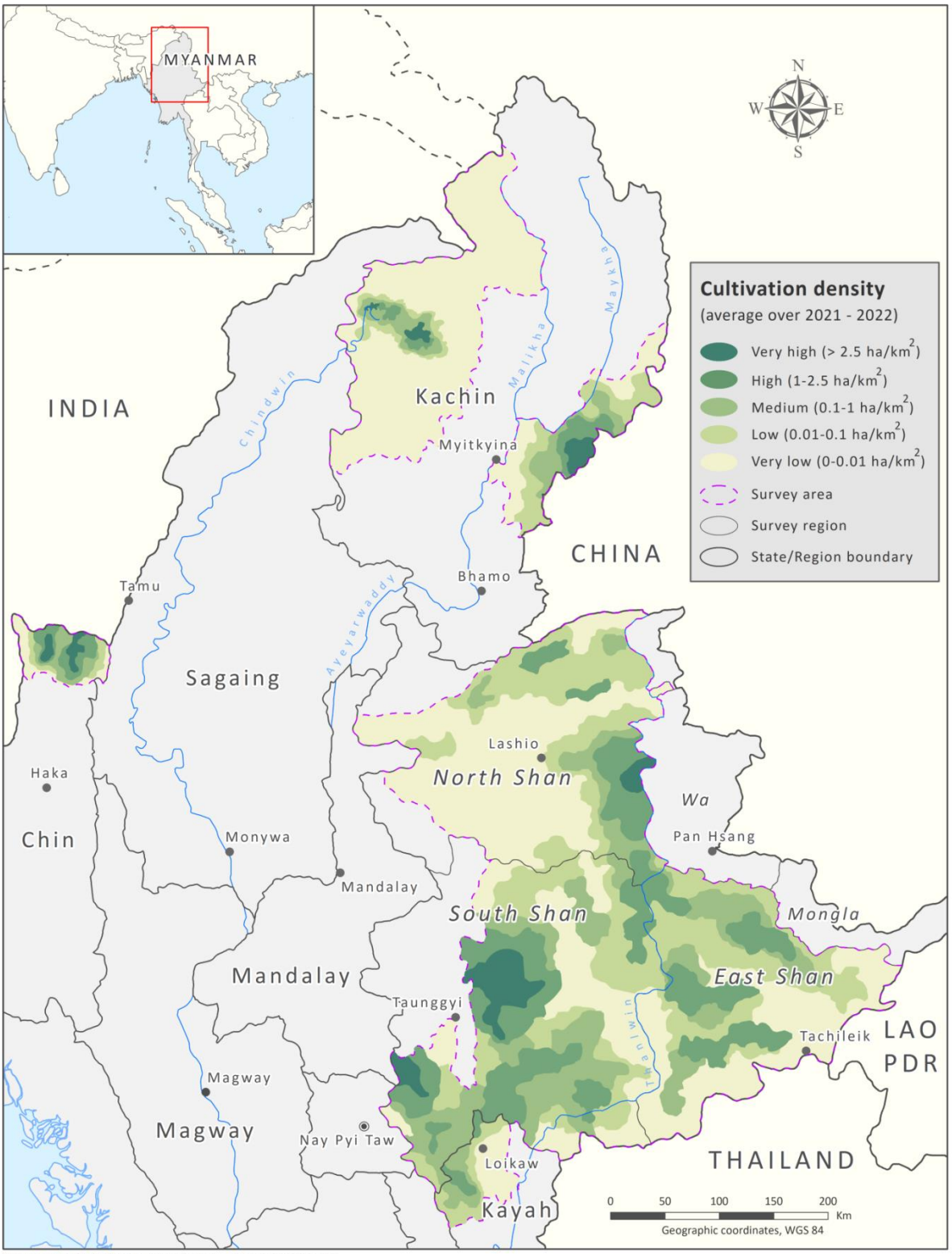

Source: UNODC Illicit Crop Monitoring Programme in Myanmar
The boundaries and names shown and the designations used on this map do not imply official endorsement or acceptance by the United Nations.

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए चुनौतियाँ–

म्यांमार से जितना ही ड्रग्स तथा सिंथेटिक ड्रग्स की आपूर्ति बढ़ेगी उतना ही भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बढ़ेगा। यह मानव सुरक्षा एवं सामाजिक कल्याण को चुनौती देता है क्योंकि जब एक ड्रग्स अपराधी समूह एक ही क्षेत्र में कार्य करता है तो उससे अधिकांश अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध आपस में जुड़ जाते हैं। ड्रग्स के तस्करों और विद्रोहियों के बीच अंतर–संबंध होते हैं क्योंकि इन्हीं तस्करों से ही विद्रोहियों को वित्तीय सहायता मिलती है और यह समूह भारतीय सीमा के बाहर संचालित होते हैं। भारत और चीन के बढ़ते हुए तनाव को देखते हुए इन नेटवर्कों से भारत के साथ ही पड़ोसी देशों के लिए भी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा हो सकता है। बाहरी तत्वों से लेकर अलगाववादी और अलगाववादी आंदोलन तक पहुंचने वाला यह ड्रग्स भारत को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। विद्रोही समूह ड्रग्स की तस्करी, छोटे हथियारों और हल्के हथियारों की तस्करी का भी साधन बनते हैं, क्योंकि हथियारों

की खरीद के लिए ड्रग्स को मुद्रा के रूप में उपयोग किया जाता है। इसलिए ड्रग्स तथा छोटे हथियारों के अवैध प्रवाह को एक दूसरे का पूरक कहा जा सकता है, जो की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए हानिकारक है। क्योंकि छोटे हथियारों से संघर्ष की तीव्रता बढ़ जाती है और अंततः एक लंबा संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। इसलिए भारत में ड्रग्स की आपूर्ति का मतलब संघर्ष का संभावित खतरा है। मिजोरम में ड्रग तस्करी मानव तस्करी को भी बढ़ावा देता है, क्योंकि ड्रग्स की लत के कारण बच्चों को बरगलाना आसान हो जाता है। किशोर तथा युवाओं में नशे की लत देश के मानव संसाधन के लिए चुनौती देती है। मादक दवाओं के दुरुपयोग से किसी राज्य की सामाजिक आर्थिक स्थिति और सुरक्षा को भी खतरा होता है।

निष्कर्ष

म्यांमार ड्रग्स तस्करी केंद्रों में से एक 'द गोल्डन ट्रायंगल' का हिस्सा है और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के साथ सीमा साझा करता है। ड्रग्स के निर्माण वितरण का भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ता है। आंतरिक संघर्ष तथा राजनीतिक स्थिरता के कारण किसी भी देश में आजीविका का नुकसान होता है जिसके कारण लोग अवैध अर्थव्यवस्था का सहारा लेते हैं। म्यांमार में लगातार राजनीतिक अस्थिरता बनी हुई है, जिसके कारण अफीम तथा सिंथेटिक दवाओं के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई है। इन ड्रग्स का बाजार भारत बनता जा रहा है क्योंकि, भारत के पूर्वोत्तर राज्य म्यांमार से सीमा साझा करते है और यही सीमाएं दवाओं के आवागमन में मदद करती हैं। चीनी नेटवर्क भी इन ड्रग्स के प्रवाह में प्रमुख भूमिका निभाते हैं, क्योंकि म्यांमार में ड्रग्स का सबसे बड़ा उत्पादन शान तथा काचिन प्रांत में होता है जो कि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के समीप हैं। म्यांमार में ड्रग्स के उत्पादन तथा भारत में ड्रग्स की बरामदगी के बीच विश्लेषण करने पर कहा जा सकता है कि दोनों का आपस में सीधे जुड़ाव है। यानी म्यांमार में ड्रग्स का उत्पादन बढ़ रहा है तो भारत में ड्रग्स की बरामदगी बढ़ रही है। म्यांमार में 2021 के सत्ता पलट के बाद म्यांमार से भारत में ड्रग्स की आपूर्ति में वृद्धि देखी गई है। मणिपुर एवं मिजोरम में कई टन ड्रग्स की बरामदगी भी हुई है। ड्रग्स का उपयोग सामाजिक व्यवधान एवं राज्य की सामाजिक आर्थिक स्थिति को अस्थिर करता है और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध, ड्रग्स तस्करी, मानव तस्करी, एचआईवी एड्स का प्रसार एवं विद्रोही समूह के वित्त पोषण को बढ़ावा देता है, जिसे हर सम्भव प्रकार से रोका जाना चाहिए।

संदर्भ

1. सूरी, एस., (2018), द सिल्क रोडः अ :ट एंड नॉट अ वार, हार्परकोलिन्स।
2. बागची, के., (2019), ड्रग्स एंड सिक्यूरिटी इन एशिया, स्प्रिंगर
3. झा, पी.सी., और शर्मा, एस.आर. (एडिटर), (2017), ट्रांसनेशनल ऑर्गनाइज्ड क्राइम एंड ट्रैफिकिंगः ग्लोबल एंड इंडियन डाइमेंशन। सेज पब्लिकेशन।
4. वर्मा, डी.के., और कुमार, एस., (2016), नारकोटिक्स ट्रैफिकिंग इन इंडियाः अ स्टडी ऑफ़ :ट, कॉजेज एंड रेमेडीज, अटलांटिक पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
5. डे, एस.के. (2018), द हेरोइन ट्रेलः ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ ए ग्लोबल स्कॉरज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
6. मिश्रा, के.के. (2017), वार ऑन ड्रग्स इन साउथ एशियाः फ्रॉम द ओपियम ट्रेड टू द प्रेजेंट डे, सेज पब्लिकेशन।
7. शिशोदिया, वी.एस., और पांडा, जे. (एडिटर), (2019), इंडिया म्यांमार रिलेशंसः चेंजिंग कंटूअर्स, विज बुक्स इंडिया
8. नायक, एन.सी., और व्हाइट, एल. (एडिटर), (2017), म्यांमारः स्टेट, सोसाइटी एंड एथनिसिटी, दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान